



# MAA KALRATRI VRAT KATHA || माँ कालरात्रि व्रत कथा ||

## Maa Kalratri Vrat Katha

पौराणिक कथा के अनुसार जब रक्तबीज ने सभी देवताओं को पराजित कर उनका राज्य छीन लिया तब सभी देवता दैत्यों की शिकायत लेकर महादेव जी के पास गए। भगवान शिव शंकर ने अपने पास आए सभी देवताओं से उनके आने का कारण पूछा। तब देवता ने त्रिलोकीनाथ को रक्तबीज द्वारा किए गए अत्याचारों का वर्णन किया।

यह सुनकर भगवान शिव शंकर ने माता पार्वती से निवेदन किया कि हे देवी, आप तत्काल उस राक्षस का संहार करें और देवताओं को उनका राजभोग वापस दिलाएं। रक्तबीज को वरदान था कि उसके रक्त की एक-एक बूंद जो जमीन पर गिरेगी, वह दूसरे रक्तबीज को जन्म देगी। जब मां दुर्गा रक्तबीज का वध कर रही थीं, उस समय रक्तबीज के शरीर से जितना रक्त जमीन पर गिरा था, उससे सैकड़ों राक्षसों की उत्पत्ति हुई। तब देवी पार्वती ने वहां तपस्या की। मां की तपस्या की तीव्रता से कालरात्रि का जन्म हुआ था।

तब माता पार्वती ने कालरात्रि से उन राक्षसों का भक्षण करने का अनुरोध किया। जब मां ने उसे मार डाला, तो उसने उसका सारा खून पी लिया और खून की एक बूंद भी जमीन पर नहीं गिरने दी। इसलिए मां के इस रूप में उनकी जीभ खून से लाल है। इस प्रकार मां कालिका रणभूमि में राक्षसों का गला काटते हुए अपने गले में सिरों की माला धारण करने लगीं।

इस तरह युद्ध में रक्तबीज मारा गया। मां दुर्गा के इस रूप को कालरात्रि कहा जाता है। कालरात्रि दो शब्दों से मिलकर बना है, एक शब्द काल है जिसका अर्थ है "मृत्यु" जो अज्ञान को नष्ट करने वाला है। एक और शब्द है रात्रि, रात्रि के अन्धकार के श्याम रंग के प्रतीक के रूप में माता का चित्रण किया गया है। कालरात्रि के रूप से पता चलता है कि एक करुणामयी माँ आवश्यकता पड़ने पर अपने बच्चों की रक्षा के लिए अत्यंत हिंसक और उग्र भी हो सकती है।

Read More religious content on  
[vedicprayers.com](http://vedicprayers.com)